''मलिन बस्ती की युवा महिलाएँ एवं अपराध''
(एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

डॉ० अनिता कुमारी

वर्तमान युग में व्यक्तिगत अपराधों की संख्या के साथ–साथ संगठित अपराधों की संख्या भी निरन्तर बढ़ती जा रही है। संगठित अपराधों व इसमें संलग्न अपराधियों के गिरोहों का पता लगाना व उन्हें पकड़ना पुलिस के लिए अत्यन्त कठिन व चुनौती से भरा हुआ कार्य है। आज आश्चर्यजनक बात यह है कि ऐसी महिला अपराधियों का प्रतिशत अधिक है जो अपने ही लिंग के प्रति अपराध (जैसे महिलाओं वह लड़कियों का अपहरण, मादक द्रव्यों की तस्करी अनैतिक व्यापार आदि) के कारण पकड़ी जाती हैं। ये महिलाएँ भारतीय दण्ड संहिता के उल्लंघन की अपेक्षा स्थानीय व विशिष्ट कानूनों के उल्लंघन के कारण अधिक पकड़ी जाती है।

वर्तमान समय में अपराध संगठन के स्तर पर अधिक हो रहे हैं जिसका मुख्य केन्द्र मलिन बस्तियाँ बन रही हैं। वास्तव में अन्य व्यापारिक संगठनों की तरह अपराधी अपने कार्यों को सुनियोजित रूप से करने हेतु मलिन बस्ती में स्वयं को गिरोह के रूप में संगठित रूप से जुआखोरी, वेश्यावृत्ति का व्यवसाय, शराब व अन्य मादक द्रव्यों को बेचने का व्यवसाय आदि ऐसे अपराध हैं जो मलिन बस्तियों में संगठित गिरोहों द्वारा बड़े सुनियोजित रूप से किये जाते हैं। संगठित अपराध वे अपराध है जिसको बहुत से व्यक्ति सामूहिक रूप से कार्यान्वित करते हैं। कई बार अपराध संगठित रूप से नहीं किया जाता, परन्तु ये परिवार महिलाओं में अभावों से ग्रस्त मलिन बस्ती की महिलाओं या अन्य किसी के साथ लेकर किया जाता है।